कृषि विज्ञान केंद्र, नई दिल्ली

(राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान)

ट्राइकोडर्मा–जैविक खेती में उपयोगी कवकनाशी

परिचय : ट्राइकोडर्मा मुख्यतः एक जैव कवकनाशी है। यह रोग उत्पन्न करने वाले कारकों जैसे–फ्यूजेरियम, पिथियम, फाइटोफ्थोरा, राइजोक्टोनिया, स्क्लैरोशियम, स्कलैरोटिनिया इत्यादि मृदोपजनित रोगजनकों की वृद्धि को रोककर अथवा उन्हें मारकर पौधों में उनसे होने वाले रोगों से सुरक्षा करता है। इसके अलावा ये सूत्रकृमि से होने वाले रोगों से भी पौधों की रक्षा करते हैं। इसका उपयोग करने पर यह फफूंद जमीन में फैलती है तथा रोग पैदा करने वाले अन्य फंफूदों को नष्ट कर देती है। इसका प्रभाव लम्बे समय तक खेतो में रहता है जिससे फसल चक्र पूरा होने तक अन्य रोगो की रोकथाम होती है। यह जैविक खादों को जल्दी सड़ाता है तथा पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाता है। जमीन मे उपलब्ध अन्य उपयोगी फफूंदों का संरक्षण कराता है जो फसल की वृद्धि में सहायक है।

ट्राइकोडर्मा के प्रयोग से लाभ

1. यह रोगकारक जीवों की वृद्धि को रोकता है या उन्हें मारकर पौधों को रोग मुक्त करता है। यह पौधों की रासायनिक प्रक्रियाओं को परिवर्तित कर पौधों में रोगरोधी क्षमता को बढ़ाता है।
2. यह पौधों में रोगकारकों के विरुद्ध तंत्रगत अधिग्रहित प्रतिरोधक क्षमता की क्रियाविधि को सक्रिय करता है।
3. यह मृदा में कार्बनिक पदार्थों के अपघटन की दर बढ़ाता है अतः यह जैव उर्वरक की तरह काम करता है।
4. यह पौधों की वृद्धि को बढ़ाता है क्योंकि यह फास्फेट एवं अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों को घुलनशील बनाता है।

ट्राइकोडर्मा के प्रयोग की विधि

1. **बीजोपचार –** बीज उपचार के लिये प्रति किलो बीज में 5–10 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से उपयोग करें।
2. **कंद उपचार –** 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति लीटर पानी में डालकर घोल बना लें फिर इस घोल में कंद को 30 मिनट तक डुबाकर रखें। इसे छाया में आधा घंटा रखने के बाद बुवाई करें।
3. **मृदा शोधनः** एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर को 25 किलोग्राम कम्पोस्ट (गोबर की सड़ी खाद) में मिलाकर एक सप्ताह तक छायादार स्थान पर रखकर उसे गीले बोरे से ढँकें ताकि इसके बीजाणु अंकुरित हो जाएँ। इस कम्पोस्ट को एक एकड़ खेत में फैलाकर मिट्टी में मिला दें फिर बुवाई रोपाई करें।
4. **नर्सरी उपचार –** बुवाई से पहले 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा उत्पाद प्रति लीटर पानी में घोलकर नर्सरी बेड को भिगोएँ।
5. **कलम और अंकुर पौधों की जड़ डुबकी –** एक लीटर पानी में 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा घोल लें और कलम एवं अंकुर पौधों की जड़ों को 10 मिनट के लिये घोल में डुबोकर रखें, फिर रोपण करें।
6. **पौधा उपचार –** प्रति लीटर पानी में 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर का घोल बनाकर पौधों के जड़ क्षेत्र को भिगोएँ।
7. **पौधों पर छिड़काव –** कुछ खास तरह के रोगों जैसे पर्ण चित्ती, झुलसा आदि की रोकथाम के लिये पौधों में रोग के लक्षण दिखाई देने पर 5–10 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

अधिक जानकारी एवं खरीदने के लिए सम्पर्क करें :

कृषि विज्ञान केंद्र

नेफेड कॉम्प्लेक्स, उजवा, नई दिल्ली –73

Ph. No. 9667971155, Website : www.kvkdelhi.org